शोध मंथन, Vol. –VIII, No. 1, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

शोध मंथन

महिला चित्रकारों का भारतीय कला में योगदान

डॉ अर्चना रानी
विभागाध्यक्षः
विभाग ड्रांइग एण्ड पेंटिंग
रघुनाथ गर्ल्स(पी0जी0),**कॉ**लिज,मेरठ
पिंकी वर्मा
शोधार्थी
विभाग ड्रांइग एण्ड पेंटिंग
रघुनाथ गर्ल्स(पी0जी0),**कॉ**लिज,मेरठ
pinkieverma_7@gmail.com

हमारे भारतीय समाज में हमेशा से ही नारी शिक्षा को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता रहा है। अगर हम प्राचीन काल की बात करें तो उस समय शिक्षा गुरुकुलों में दी जाती थी तथा शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल पुरुषों (लड़कों) को ही था। लड़कियों को शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। इसके पश्चात् बौद्ध कालीन युग में भी स्त्री शिक्षा की उपेक्षा की गई। उस समय में भी शिक्षा केवल बौद्ध मठों एवं विहारो में दी जाती थी। क्योंकि शिक्षा वहीं रहकर प्राप्त करनी होती थी तथा इसके लिये बच्चों को घर से दूर इन बौद्ध मठों एवं विहारो में निवास करते हुए अपने गुरूजनों की सेवा कर शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। अपने तथा गुरूजनों के भोजन की व्यवस्था, साफ सफाई आदि सभी कार्य इन बच्चों को स्वयं ही करने होते थे। इसलिये इन मठों से स्त्री को दूर ही रखा गया,केवल बड़े घरों की महिला परदे में रहकर घर पर शिक्षा प्राप्त कर सकती थी किन्तु निम्न वर्ग की महिलाओं को शिक्षा प्राप्ति के लिये कोई व्यवस्था नहीं थी। इसके तुरन्त बाद मुस्लिम काल की शुरुआत हुई। मुस्लिम समाज में पहले स्त्री शिक्षा पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था। इस काल में शिक्षा मकतब एवं मदरसों में दी जाती थी। इन मकतबों में छोटी लड़कियाँ लड़कों के साथ पढ़ती थी तथा इन्हें इसके बाद आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिये घर पर ही शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। केवल राज घराने की महिलाओं के लिये अलग प्रबन्ध था। उन्हें राजमहलों में शिक्षा व्यक्तिगत रुप से दी जाती थी।

इस युग में सलीमा, मुमताज, नूरजहाँ आदि विदुषी महिलाएँ हुई जिन्होंने पर्दे के पीछे शिक्षा प्राप्त करके भी भारतीय जगत में अपना नाम अमर व अजर कर दिया। इस युग में हस्तकला की शिक्षा भी दी जाने लगी थी। राजघरानों में मुस्लिम शासक विलासिता पूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। इसलिये विलासमय जीवन व विलासमय सामग्री के लिये हस्त कलाओं को बढ़ावा दिया गया। इन सबके निर्माण में कहीं न कहीं ललित कला का नाता अवश्य था। इसलिये इस युग में ललित कलाओं को बढ़ावा मिला। इसमें संगीत कला, चित्रकला व नृत्यकला का विकास तीव्र गति से हुआ। स्त्रियों की इन ललित कलाओं में विशेष रूचि होती है।

इसी समय से ललित कलाओं में स्त्रियाँ बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने लगीं। ललित कला की शिक्षा हेतु विभिन्न कला शिक्षा केन्द्रों की व्यवस्था की गई। इन केन्द्रों को घराने के नाम से जाना जाता था।

किसी भी समुदाय की बात की जाए तो नारी शिक्षा को हमेशा से उपेक्षित भाव से देखा जाता रहा है। नारी की शिक्षा के विषय में अनेक मत प्रचलित है। पुरुष अपने अहंकार वश नारी एवं नारी शिक्षा के प्रति हमेशा से पूर्वाग्रहित रहा है। वह नारी बुद्धि एवं शक्ति में किसी पुरुष से कम नही है। उसमें पुरुषों से कही ज्यादा उत्तम शक्ति है जो उसे किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करती है। मनु ने तो यहाँ तक कहा है कि माता–पिता का कर्तव्य है कि विवाह से पूर्व वे बालिका को सर्वांग शिक्षा अवश्य दें। ललित कला की शिक्षा उन्हें अवश्य मिलनी चाहिए।

हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के नेताओं ने देश की उन्नति एवं विकास को जारी रखने के लिये शिक्षा के महत्व को समझ लिया था। साथ ही उन्होंने स्त्री शिक्षा के महत्व को भी समझा। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान नारी शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। सन् 1947 तक भारत में स्त्री शिक्षा की संस्थाएं 28196 थी और पढ़ने वाली बालिकाओं की संख्या 42,97,785 थी।[1] इस प्रकार स्त्रियों की शिक्षा में काफी सुधार किये गये तथा उन्हें समानता का अधिकार प्रदान करते हुए पुरुषों के समान शिक्षा प्रदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ। स्त्रियों को ललित कलाओं की शिक्षा भी दी जाने लगी थी। इस समय कला शिक्षा के लिये कोई शिक्षा संस्थान नहीं थे। स्त्रियाँ सामान्य शिक्षा संस्थानों में कला को सामान्य विषय के रूप में पढ़ती थी। परन्तु जैसे जैसे समय में परिवर्तन आया कला के विभिन्न शिक्षा संस्थानों की स्थापना की जाने लगी। अब स्त्रियों को कला शिक्षा के लिये नवीन मार्ग मिलने प्रारम्भ हो गये। भारत में महिलायें कला शिक्षा प्राप्त कर अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिये आगे आने लगी। भारत में महिला कलाकारों के विषय में अगर बात की जाये तो इसका प्रस्फुटन लोक कला के साथ ही प्रारम्भ हो जाता है। लोक कला को केवल महिलाओं की कला माना जाता हैं, क्योंकि लोककला का सम्बंध संस्कारों, उत्सवों, अनुष्ठानों आदि से होता है तथा महिलाएँ इन संस्कार अनुष्ठानों व उत्सवों को श्रृद्धा पूर्वक करते हुए लोक चित्रों का निर्माण करती है।

आधुनिक युग में महिला कलाकारों ने न केवल स्त्रियों को नयी पहचान दिलायी है अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके अधिकारों को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका भी अदा की है। आधुनिक युग में महिलाओं की कला के क्षेत्र में भागीदारी काफी प्रभावशाली ढंग से बढ़ी है। प्रारम्भ में केवल कुछ ही महिला कलाकारों को जाना जाता था। इनमें पारा एवं स्वर्ण कुमारी का नाम प्रमुख है। इन दोनों कलाकारों ने न केवल अपने को अपितु सम्पूर्ण नारी जाति को सम्मान दिलाया। आज तक नारी को घर की चार दीवारी के अन्दर काम करने की मशीन समझा जाता था उन्हें कोई जाने या उनसे कोई परिचित हो ऐसा दूर दूर तक नही था। परन्तु धीरे–धीरे कला के माध्यम से महिलाओं ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया। यह एक ऐसी लहर थी जो एक बार उठी तो रूकने का नाम नहीं लिया। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के श्री सिंगोर कान्स्टाब्टिनों आगस्तों ने सन् 1822 में बम्बई में 'स्कूल ऑफ आर्ट फॉर लेडीज '(बीववस वि तज वित स्कंपमे) के नाम से ब्रिटिश महिलाओं के लिये एक स्कूल आरम्भ किया। इस स्कूल में भारतीय महिलाओं के लिये दरवाजे बन्द थे। ब्रिटिश शासन काल में ही कलकत्ता में सन् 1879 में युवा महिला कलाकारों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें रवीन्द्रनाथ टैगोर की भतीजी गृहणी सुनयना देवी को लोक कला (छंपअम ।तज) के लिये सेलीब्रेटी स्टेटस दिया गया।[2] उस समय भी ऐसी कई महिला चित्रकार हुई जिनकी कलाकृति एवं चित्रण कार्य ने उन्हें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान दिलाई। प्रतिमा टैगोर, लीला मेहता, सविता टैगोर, सुशीला, व सुकुमारी देवी आदि ऐसी ही महिला चित्रकार हैं। धीरे–धीरे भारत में कला स्कूलों की स्थापना ने महिला चित्रकारों को कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाने के सुअवसर प्रदान किये। 19वीं शताब्दी में कला के क्षेत्र में विशेष क्रान्ति उठी। इस क्रान्ति के फलस्वरूप मद्रास कलकत्ता लाहौर मुम्बई आदि कई स्थानों पर कला विद्यालय स्थापित किये गये। इन विद्यालयों में कलाकार अपनी योग्यतानुसार विषय में प्रवेश लेकर अपनी प्रतिभा में निखार ला सकते थे। सन् 1950 के आस–पास इन विद्यालयों में महिला कलाकारों का एक बहुत बड़ा वर्ग विकसित हो गया था। इन महिला कलाकारों ने इन विद्यालयों से शिक्षा ग्रहण कर कला के क्षेत्र में एक विशेष क्रान्ति ला दी। अब चारों ओर इसी का बोल बाला

हो गया। भारतीय समाज में महिलाओं को एक पहचान मिली। वह अब घर से बाहर की दुनिया में उड़ान भरने लगी। इन कला रूपी पंखों ने इन महिला कलाकारों को आकाश में उड़ान की एक चाह प्रदान की।

सन् 1970 के दशक में महिला चित्रकारों की कला में कुछ परिवर्तन आया। अब इनमें आत्म जागृति का उदय हुआ। सन् 1986 में ललित कला एकादमी, त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली, भारत सरकार के मानवाधिकार एवं विकास मंत्रालय, शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्रालय, वूमेन वेलफेयर मंत्रालय एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से 'भारतीय महिला कलाकार' शीर्षक से देश की प्रमुख महिला कलाकारों की संयुक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। निश्चित ही देश में महिला कलाकारों की यह प्रथम विशाल प्रदर्शनी थी, जिसमें देश की अनेक महिला कलाकारों को एक मंच प्रदान किया गया। इस प्रदर्शनी में 43 महिला कलाकारों की 73 कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया था।[3]

आज हमारे देश में ऐसी बहुत सी महिला कलाकार हैं जिनकी कलाकृतियों ने हमारे भारतीय समाज में महिलाओं को विशेष दर्जा दिलाया है। आज महिलायें टैक्सटाइल डिजाइनिंग, प्रिन्ट मैकिंग, इन्टीरियर (प्दजमतपवत क्मेपहदपदह) डिजाइनिंग, क्ले मॉडलिंग, फैशन डिजाइनिंग व ज्वैलरी डिजाइनिंग में अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रही हैं। इन क्षेत्रों में आगे आयी महिलाओं ने भारत ही नहीं, विदेशों में भी महारथ हासिल किया। आज महिलाओं को नई पहचान व नई राह मिली हैं। आज भारत में ऐसी बहुत ही महिला चित्रकार है जिनकी कलाकृतियाँ कला जगत की अमूल्य निधि के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। बीसवीं सदी की पहली प्रसिद्ध महिला कलाकार टैगोर परिवार की सदस्य थी। जिनका नाम सुनयना देवी था। भारत में लगभग स्वतन्त्रता पूर्व के सन्दर्भ टैगोर के परिवार में अपने भाइयों के साथ अपनी चित्रकला को रखने का धैर्य दिखाया था सुनयना देवी ने।

कई भारतीय महिला चित्रकारों ने भारतीय समस्याओं से सम्बन्धित विषयों के आधार पर अनेक चित्रों की रचना की है। इसके अतिरिक्त कुछ महिला चित्रकार अपनी चित्र प्रदर्शनियों से अर्जित धन राशि का योगदान देश की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ाने तथा समाज के हित के लिए योगदान करती हैं। सन् 1960 के दशक में महिलाओं ने बड़ी संख्या में कला के क्षेत्र में प्रवेश करना प्रारम्भ किया।

आज भारतीय कला स्कूलों में लगभग आधे से ज्यादा मात्रा में महिलाएँ हैं। भारत में क्यूरेटर, लेखक, गैलरी मालिकों में बहुमत आज महिलाएँ हैं। महिला कलाकारों में अंजलि इलामेमन, अर्पणा कौर, मीरा मुखर्जी, अमृता शेरगिल, गोगी सरोज पाल, जयअप्पा स्वामी, देवयानी कृष्ण, माधवी पारेख, नलिनी मलिनी, अर्पिता सिंह, मृणालिनी मुखर्जी, अनुपम सूद, जय श्री चक्रवर्ती व नीलिमा शेख आदि ऐसे नाम हैं जिन्होंने कला के क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित की व कला जगत में एक विशेष स्थान बना लिया हैं। नारी के विषय में कहा भी गया है– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्त तत्र देवताः', अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है वहाँ देवता निवास करते हैं। इस प्रकार नारी की तुलना देवता से की गई है।

आधुनिक भारतीय कला की शुरुआत कहीं न कहीं अमृता शेरगिल की कला से ही की जाती है। अमृता शेरगिल वास्तव में एक ऐसी महिला चित्रकार हैं जिन्होंने अपनी रचनात्मक क्षमता के बल पर बहुत ही छोटी उम्र में बड़ा मुकाम हासिल कर लिया था। अमृता शेरगिल ने योरोपियन तकनीक के प्रयोग तथा भारतीय विषयों को एक सूत्र में पिरोने का सफल प्रयोग किया। वह पाश्चात्य सांकेतिक कला ूमेजमतद पउचतमेपवदपेउद्ध से प्रभावित हुई विशेषकर गोंगा ;ळंनहनपदद्ध से। उन्होंने पाश्चात्य लयात्मकता से प्रभावित होकर भारतीय दीनता से युक्त चित्रों को बनाया। उन्होंने चित्र कौशल एवं शैली में पश्चिमी हैं परन्तु इनके विषय भारतीय दैनिक जीवन से इस कारण उनके चित्रों में पाश्चात्य एंव भारतीय कला दोनों ही का मिश्रण दिखता है।[4] उन्होंने भारतीय विषयों को लेकर जिस प्रकार कलाकृतियों का सृजन किया वह प्रशंसनीय है।ऐसा जान पड़ता है कि वह अपने चित्रों में राजपूत चित्रों के रंगो से भी प्रभावित हुई है। उनका हाथियों का नहाना शीर्षक चित्र बहुत सुन्दर है। इसमें शोख लाल रंग प्रयोग किया गया है। ऊंटों का विश्राम शीर्षक चित्र भी बहुत सुन्दर है। उनकी कला साधारण एंव अलंकारिक शैली की है। परन्तु साथ ही यह बहुत भाव–युक्त एवं अपने भावों में उत्पन्न करने वाली है। आपके चित्रों की आकृतियों का दुरूख का भाव उस समय के कष्टप्रद

ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

जीवन को दिखाता है। इस कारण हम यह कह सकते है कि आपके चित्रों में भावों की सुन्दरता भावों की भाषा एंव रंगों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया हैं। (चित्र सं–1) वह सर्वप्रथम भारतीय कलाकार थीं जो तैल एंव रंगों में ही चित्र बनाती थीं। आपके चित्रों में नारी स्वभाव की सहज कोमलतायें, ममता एंव दया के भावों को बहुत सुन्दर चित्रण किया गया है।[5] उनकी वधू का शृंगार, भिखारी, स्त्री एवं सूरजमुखी, मदर इण्डिया कुछ इसी प्रकार की कलाकृतियाँ हैं। उन्होंने भारतीय महिलाओं के सम्मुख स्वयं को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। जो स्थान साहित्य में मुंशी प्रेमचन्द जी का है वही स्थान श्री वाचस्पति गैरोला ने चित्रकला में अमृता शेरगिल को दिया है। अमृता ने सन् 1936 में अजन्ता ऐलोरा की यात्रा की इस यात्रा के बाद बनाए गये उनके चित्रों में बहुत परिवर्तन मिलता है। भावपूर्ण चेहरों में बोलती आँखें हाथ व पैरों की मुद्रा मे एक नया आकर्षण तथा मानवाकृतियों के समूह संयोजन में अजन्ता का प्रभाव स्पष्ट है।[6]

अर्पणा कौर अन्तर्राष्ट्रीय आधुनिक महिला चित्रकारों में से एक है। पंजाबी चित्रकार होने के नाते उन्होंने सिख गुरूओं और आध्यात्मिकता को अपनी कला का आधार बनाकर प्रस्तुत किया। उनकी कलाकृतियाँ अधिकतर महिलाओं पर आधारित होती हैं। उन्होंने इन्हीं से सम्बन्धित सामाजिक समस्याओं जैसे नौकरानी ,माया त्यागी रेप काण्ड जिसमें माया त्यागी नामक महिला का रेप उन पुलिस वालों ने किया जिनको हमारी भारतीय सरकार ने महिलाओं व गरीबों व असहाय लोगों की सहायता के लिये नियुक्त किया हैं। उन्होंनें अपनी वर्दी व अपनी नौकरी को दाग–दाग कर दिया। अर्पणा कौर ने इस समस्या को ध्यान में रखते हुए रक्षक ही भक्षक नामक चित्रों की एक पूरी शृंखला तैयार की। इनके अलावा उन्होंने विभिन्न सामाजिक विषयों को अपनी तूलिका से उकेरा। उनकी कला में किसी भी प्रकार की कोई अलंकारिता हमें देखने को नही मिलती। उन्होंने सपाट धरातल पर अपनी सूझ व रंगों की समझ को दर्शाते हुए चित्रों की स्थापना की। गहरे धरातल पर हल्के रंग से मानवाकृतियाँ को उभारा है। ये मानवाकृतियाँ साधारण रूप में चित्रित न करके उन्होंने उन्हें अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर धरातल में कहीं उड़ती हुई, कहीं ध्यान मग्न तथा कहीं कहीं पर तो उन्होंने उन आकृतियों को बीच से कटा हुआ बनाकर हमें सोचने पर मजबूर कर दिया हैं। उनकी मानवाकृतियाँ धड़ ,पैर तथा हाथ से अलग अलग होकर भी एक सम्पूर्ण मानवाकृति को दर्शाती हैं। ये मानवाकृतियाँ अपने सही अनुपात में बनाई गई है। उन्होंने अपनी कलाकृतियों में स्केल, परकार, चाँदा, ज्यमितीय सामान व धागा, बादल व पानी के साथ मानवाकृतियों को अंकित किया है। (चित्र सं–2) उनकी ये कलाकृतियाँ इस यथार्थवादी संसार से सम्बन्धित न होकर अतियथार्थवादी संसार की रचना प्रतीत होती हैं। उन्होंने कैंची व धागों का प्रयोग कलाकृतियों में अधिकता से किया हैं। जिस कारण उनको अनेक कलाकार कैंची कहकर सम्बोधित करते हैं। उन्होंने साधारण जनजीवन में कैंची के महत्व को देखते हुए उनका चित्रण करना प्रारम्भ किया। उन्होंने सोहनी महिवाल नामक एक शृंखला तैयार की है। जिसमें सोहनी को घड़े के साथ पानी में तैरते, कहीं पर एक घड़े में सोहनी व महिवाल के पैर को चित्रित किया हैं। उन्होंने प्रत्येक उस व्यक्ति या नारी को सोहनी का प्रतीकात्मक रूप माना है, जिन्होंने सामाजिक कुरूतियों व जीवन संघर्ष को अपना ध्येय बनाकर उनके प्रति आवाज उठाने की हिम्मत की है। इस प्रकार अर्पणा आज अतियथार्थवादी कलाकारों की सूची में मुख्य स्थान पर हैं। उन्होंने यथार्थवादी संसार से समस्याओं का चयन कर उनको अपनी कल्पनाशक्ति के आधार पर अतियथार्थवादी विचारधारा में चित्रित कर इस मतलबी व सामाजिक समस्याओं से ग्रसित संसार पर एक कटाक्ष किया है।

सन् 1945 में जन्मी गोगी सरोज पाल भारतीय महिला चित्रकारों में उच्च पायदान पर है। उन्होंने जिस सफलता को पाया उसका रास्ता आसान नहीं था। उन्होंने बोल्ड विचार और जीवन शैली को अपनाया और यही बोल्ड विचार हमें उनकी कलाकृतियों में देखने को मिलते हैं। इस प्रकार वे दूसरी महिला चित्रकारों से अलग नजर आती है। यही बोल्डनेस उनकी पहचान बन गई है। उन्हें मानवीयता की गहरी समझ है। इस समझ को दर्शाते हुए उन्होंने अपने चित्रों में स्त्री पुरूष व बच्चें की दुनिया को बहुत ही सहज तरीके से उतारा हैं। (चित्र सं–3) दिवराला का सती कांड जो सन् 1987 में हुआ था। इस सतीकाण्ड ने पूरे देश को अपने तरीके से उद्वेलित किया क्योंकि गोगी सरोज पाल ने स्त्रियों की दुनिया को अपनी कला के स्थान दिया अतः इस कलाकार ने इस समस्या (बहस) को अपनी नयी चित्र शृंखला में स्थान दिया। गोगी सरोज पाल स्वयं कहती है 'मेरी पेंटिग में मेरा औरत होना बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए मुझे कोई शर्मिन्दगी महसूस नहीं होती

है। औरत होने का जो अनुभव है उसका मैं खूब रचनात्मक इस्तेमाल करती हूँ। मुझे तो औरत होना एक लाभप्रद स्थिति नजर आती है। वही कितने कमाल की बात है। रचनात्कता का कितना तीखा एहसास है उसमें। बच्चे को पैदा करने, उसे बड़ा करने के अनुभव ने मुझे पेंट करना भी सिखाया है। संक्षेप में, मुझे औरत होने की कोई तकलीफ नहीं है"।[7] इस प्रकार उन्होंने अपने महिला पक्ष को बल देते हुए महिला होने के लाभ बताये। एक महिला होने के नाते उन्होंने साबित कर दिया कि महिला कमजोर नही है। बस जरूरत है उसमें इच्छा शक्ति जागृत करने की।

अर्पिता सिंह आज समकालीन कला के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी कला कृतियाँ कला के क्षेत्र में अपनी एक अलग विशेषता रखती हैं। ये प्रसिद्ध चित्रकार परमजीत सिंह की अर्द्धांगनी है परमजीत जी अर्पिता सिंह को अपनी पत्नी के रूप में पाकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं। अर्पिता सिंह की कला के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान है उनकी कलाकृतियों को तीन भागों में बाँटा गया है आकृति मूलक कृतियाँ जिनको प्रथम भाग में रखा गया है द्वितीय भाग में उनकी बाल कला पर आधारित कृतियों को रखा गया है तथा तृतीय भाग में अमूर्तवादी कृतियों को स्थान दिया गया है।(चित्र सं–4) अर्पिता सिंह के रेखांकन उनकी पहचान बन चुके हैं इस प्रकार इस महिला चित्रकार ने अपने आत्मबल व रुचि को अपना ध्येय बनाकर आज राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है। कला में केवल आकारों का महत्व चाहे न हो, लेकिन कला में नये रचनात्मक आकारों की खोज बहुत महत्वपूर्ण है। नये आकार ही कहीं हमें वस्तु जगत को अपने आस–पास को नयी तरह से देखने को मजबूर करते हैं और एक इस अर्थ में भी कला हमारे जीवन को नया करती है। अर्पिता सिंह की छोटी–छोटी झड़ियां जो मानो विभिन्न मन स्थितियों की प्रतीक सरीखी भी है। फहरता हुआ बड़ा चित्र इस बात का अच्छा उदाहरण हैं इनके देसज रंग भी गौरतलब है। लेकिन बहुत कम युवा कलाकारों के चित्र ऐसे हैं जिनमें आकारों की ऐसी अर्थपूर्ण खोज और उनकी सार्थक संरचना देखने को मिलती है।[8]

सुप्रसिद्ध चित्रकार विनोद बिहारी मुखर्जी की पुत्री मृणालिनी मुखर्जी आज अपने मूर्ति शिल्प के कारण आधुनिक भारतीय कला समाज में एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी हैं। उन्होंने वैस्ट(जम) अपरम्परागत मैटीरियल का इतना अच्छा और सुन्दर तरीके से प्रयोग किया कि कोई सोच भी नहीं सकता। जब मृणालिनी ने म्यूरल शिक्षा के समय अपनी सोच के अनुरूप पतली रस्सियों की बनावट में कार्य करना प्रारम्भ किया तो उन्हें काफी प्रोत्साहन मिला। यह एकदम नवीन सोच थी। उन्होंने जूट जैसी सामान्य सी वस्तु को बहुत ही अच्छी तरह से प्रयोग किया है। मृणालिनी मुखर्जी जी ने स्वयं ही स्वीकार किया है कि इस माध्यम में कार्य करते हुए उन्हें किसी भी प्रकार की कोई बोरियत महसूस नहीं होती, अपितु उन्हें आनन्द आता है। मृणालिनी मुखर्जी जिस माध्यम को लेकर कार्य कर रही है उसमें बहुत ही धैर्य की आवश्यकता होती है। इस माध्यम में कार्य करना और उसमें स्पीड बनाना दोनों ही मुश्किल कार्य है परन्तु मृणालिनी ने दोनों ही कार्यो में महारथ हासिल कर ली है। वह इतनी स्पीड से कार्य करती है कि आपको आश्चर्य होगा। इसके साथ ही इस चित्रकार ने ग्राफिक माध्यम से भी काफी अच्छा कार्य किया है। मृणालिनी जी अपनी कलाकृतियों में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री स्वयं खरीदती है तथा तैयार भी स्वयं ही कराती हैं। वह पतली पतली रस्सियों की सामान्य आकार की बोरियां या बोरे खरीदती है।(चित्र सं–5) मृणालिनी मुखर्जी ने जूट को गहरे रंग में रंगकर उसे अधिक वाल्यूम प्रदान किया है। उनके आकार जैसे पुष्प मानव जननांगो के प्रतीक के रूप में उभरते हैं।[9] यह सामग्री वे बंगाल और गुजरात से मँगाती है। मूर्ति शिल्प में वह सन के स्वाभाविक रंगों का इस्तेमाल तो करती है– बैगनी, हरे, नीले, काले, सुनहरे तमाम तरह के रंगों की विशेष बुनावट पाने के लिए वह स्वयं अपनी देख–रेख में इन रस्सियों को रंगाती हैं।[10] बसन्ती–परी, वन श्री वोमेन ऑन पीकॉक आदि उनकी प्रमुख कृतियों में से हैं।

अंजली इलामेनन एक ऐसी उच्च कोटि की कलाकार हैं जिन्होंने अपनी कलाकृतियों में आकारों का निश्चित ही स्थान प्रदान किया है। इनके चित्रों में दुख भरी आंखे बहुत ही प्रभावशाली है जो सच्चाई एंव दुख को प्रकट

ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्त्री आकृतियाँ रश्यिन एंव रंगाकन वाइजेन्टाइन सा दिखता है उनके चित्रों की भूमि अधिकतर कठोर है। जैसे हार्ड बोर्ड या मैसोनाइट बोर्ड। उनके आकार प्रतिमा की तरह गमगीन शान्त एवं स्थिर है।[11] उनकी कलाकृति परिपक्वता, दुख के साथ–साथ हमें यथार्थ का बोध भी कराती है।(चित्र सं–6) उन्होंने चित्रों में यथार्थ, दुख, विषाद आदि को उसी रूप में चित्रित किया है जिस रूप में वह यथार्थ जगत में घटित होता। उन्होंने कई चित्रों में स्वयं को एक पात्र के रूप में भी चित्रित किया है। उनके चित्रों में ऐसी शक्ति है जो मनुष्य की शान्ति की सरलता भरी भावना तथा तनाव की विषाद भरी भावना को प्रदर्शित करती है।

इस प्रकार निष्कर्षतः आज हमारे देश में ही नहीं, विदेशों में भी नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है। नारी ने अपने आत्मबल व रचना क्षमता के बल पर अपनी एक अलग पहचान बना ली है। आज महिलाएँ पर्दे से बाहर आकर पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है वह बुद्धि, योग्यता आदि किसी में भी पुरूषें से कम नही है और यह हमारी भारतीय महिला चित्रकारों ने साबित कर दिया हैं। इन महिला चित्रकारों से प्रेरित व प्रभावित होकर आज न जाने कितनी महिलाएँ इस क्षेत्र में आगे आयी हैं। इतना ही नहीं उन्होंने अपने मौलिक अधिकारों को जाना तथा इसको दबाने वाले के खिलाफ आवाज बुलन्द की हैं।

संदर्भ संकेत

लेखक	***पुस्तक***
1. भटनागर सुरेश, कुमार संजय	*– भारत में शिक्षा का विकास, सूर्या पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2002–03, पृष्ठ–510*
2. कला दीर्घा	*– अक्टूबर 2003, अंक 7, वर्ष 4, पृष्ठ–13*
3. कला दीर्घा	*– अक्टूबर 2003, अंक 7, वर्ष 4, पृष्ठ–14*
4. दास श्रीमती कुसुम	*– भारतीय पाश्चात्य कला उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी लखनऊ, प्रथम संस्करण 1977, पृष्ठ – 168*
5. वही	*– वही, पृष्ठ –168–169*
6. अग्रवाल,आर0ए0	*– कला विलास, भारतीय चित्रकला का विवेचन, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस,मेरठ,नवीन संस्करण 2002,पृष्ठ 203–204*
7. भारद्वाज,विनोद	*– आधुनिक कला कोश, सचिन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1959, पृष्ठ–329–30*
8. समकालीन कला	*– ललित कला अकादमी की पत्रिका नवम्बर 1983 संख्या–1 पृष्ठ – 144*
9. भारद्वाज,विनोद	*– आधुनिक कला कोश,सचिन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1959, पृष्ठ–326*
10. कला दीर्घा	*– अक्टूबर 2003 अंक–7 वर्ष–4, पृष्ठ–16*
11. विरंजन, राम	*– समकालीन भारतीय कला,निर्मल बुक एजेन्सी,विश्वविद्यालय परिसर कुरूक्षेत्र, प्रथम संस्करण–2003 पृष्ठ–72*

ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

महिला चित्रकारों का भारतीय कला में योगदान

चित्र सं– 1 अमृता शेरगिल

चित्र सं –4 अर्पिता सिहं

चित्र सं –2 अर्पणा कौर

चित्र सं–5 मृणालिनी मुखर्जी

चित्र सं –3 गोगी सरोज पाल

चित्र सं –6 अंजलि इला मेनन